The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-3, Issue-3, October-2024
www.theresearchdialogue.com

अध्यापकों में किशोरावस्था की संवेगात्मक विकास की समझ का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ.हरीश कुमार पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर
आदित्य प्रकाष जालान टीचर्स टेनिंग कॉलेज, कुदलुम, राँची
ईमेल : harishkumarpandey5@gmail.com

सारांश

जीवन का भावना युक्त होना अति आवश्यक है। भावना विहीन जीवन मृत्यु समान है। मृत जीवन को सुवाषित नहीं बनाया जा सकता है। भावना से ही मानस तैयार होता है और मानस के तैयार होने पर व्यक्ति के व्यवहार, सोच, विचार तथा क्रिया सभी में फर्क पड़ता है। जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए सर्वसम्मत और सर्वमान्य मार्ग षिक्षा की ज्योति से ही सर्वाधिक प्रकाषित होता है। जीवन का उद्देष्य श्रेष्ठता की प्राप्ति है। श्रेष्ठता का आधार जीवन व्यवहार की आदत है। आदतों के मूल में व्यक्ति की संवेगात्मक शक्ति कार्य करती है। व्यक्ति की जैसी मूल प्रवृत्ति होगी ठीक उसी का वह अनुसरण करता है। शिक्षा तो एक साधन मात्र है परंतु षिक्षा की नींव यदि संस्कारों से युक्त है तो निष्चित रूप से बालक की मूल प्रवृत्ति तथा उसके संवेगों को दमित कर उसे नई चेतना से युक्त मार्ग प्रषस्त कर सकती है। शिक्षा सुधारक जॉन अमोस कमोनियस के परिश्रम से उनकी पुस्तक स्कूल ऑफ इनफैंसी के प्रकाषन के साथ सन् 1628 ई. में शिक्षा प्रणाली में वैज्ञानिक पद्धति का उद्भव हुआ। बाद में वाटसन् महोदय ने बालकों के विषय में कहा कि, "तुम मुझे एक बालक दो और मुझे यह बताओं कि उसे क्या बनाना है? मैं उसे एक डॉक्टर, एक इंजीनियर, एक वकील, एक चोर जो हो मैं उसे बनाकर दे दूंगा।" शिक्षा की गुणवत्ता उसकी सामाजिक स्वीकार्यता की नींव डालती है। यही समाज को एक भविष्य दृष्टि प्रदान करती है।

शब्द संक्षेप *: किषोरावस्था, विकास, सांवेगिक विकास और शिक्षा*

प्रस्तावना :

आज भारत विश्व का सबसे युवा देश है। आज संपूर्ण विश्व भारत की ओर नजर घुमाए देख रहा है। भारत के यषस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी जी ने अपने भाषणों में अनेकों बार इस बात का जिक्र कर चुके हैं कि भारत युवा शक्ति से संपन्न राष्ट्र है तथा युवा शक्ति ही विष्व को ज्ञान, विज्ञान, अनुसंधान तथा नवाचार की नई दिषा प्रदान कर सकता है। इसलिए राष्ट्र की यह जिम्मेवारी है कि वह अपने युवाओं को पथ–प्रदर्षित करे तथा उसकी चेतना को सही मार्ग दिखाए। आज का युवा दिग्भ्रमित हो रहा है। भौतिकता के आंधी में वह उड़ा जा रहा है। उसे नहीं पता किस ठौर पर ठिकाना मिले। प्रबल प्रबलता का दूसरा नाम किषोरावस्था है। प्रो. बी.एन. झा ने किषोरावस्था में संवेगात्मक विकास के संदर्भ में यह कहते हैं कि, "किषोरावस्था में संवेगात्मक विकास में इतनी विभिन्नता होती है कि किषोर एक ही परिस्थिति में विभिन्न अवसरों पर विभिन्न प्रकार का व्यवहार प्रदर्षित करता है, जो परिस्थिति एक अवसर पर उसे आनंदमय बनाती है वही परिस्थिति उसे दूसरे अवसर पर दुःखी बना देती है।"

किषोरावस्था में शारीरिक विकास विषेष कर यौन परिपक्वता तुफानी वेग से प्रकट होती है। इस अवधि में शरीर का विकास तीव्र गति से होता है। तथा शरीर में अनेक परिवर्तन होने लगते हैं। इस कारण किषोर–किषोरियों के संवेग भी प्रभावित होते हैं। उनके संवेगों में अस्थिरता की मात्रा बढ़ जाती है। किषोरावस्था में संवेगों पर नियंत्रण करना कठिन हो जाता है। फलतः किषोर का व्यवहार जटिल हो जाता है। प्रो. हरलॉक ने संवेगों की परिवर्तनषीलता के बारे में लिखा है कि, "संवेगात्मकता व्यक्ति का स्वास्थ्य दिन के समय वातावरण संबंधी प्रभाव और कारकों पर आश्रित रहने की वजह से समय–समय पर परिवर्तित होता रहता है। किषोरावस्था में यौन अंगों का तीव्र विकास होने के कारण प्रेम व स्नेह नामक संवेग अधिक बढ़े हुए रूप में होता है। यह संवेग विषम लिंगी के प्रति आकर्षण के रूप में अभिव्यक्त होता है।"

अध्ययन के उद्देष्य :

1. किशोरों के संवेग का अध्ययन करना
2. किषोरों के संवेगात्मक विकास का अध्ययन करना
3. अध्यापकों के किषोरावस्था की सांवेगिक समझ का अध्ययन करना

किषोरावस्था की क्रियात्मक परिभाषा :

बाल्यावस्था की समाप्ति के पश्चात अर्थात 12 या 13 वर्ष की आयु से किषोरावस्था आरंभ होती है। किषोरावस्था को आंग्ल भाषा में Adolescence कहा जाता है, जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के क्रियापद Adolescere से हुई है, जिसका अर्थ होता है वृद्धि होना या परिपक्वता की ओर बढ़ना। प्रस्तुत शोध शीर्षक की समीक्षात्मक अध्ययन में 13 से 21 वर्ष की आयु वर्ग को किषोरावस्था के रूप में परिभाषित किया गया है।

मनोवैज्ञानिक स्कीनर ने किषोरावस्था के बारे में कहा है कि, "किषोरावस्था एक नया जन्म है क्योंकि इसी में उत्तम और श्रेष्ठ मानव विषेषताओं के दर्षन होते हैं।"

किषोरावस्था की प्रमुख विषेषताएं –

किषोरावस्था की प्रमुख विषेषता अग्रांकित है –

- शारीरिक विकास
- तीव्र मानसिक विकास
- मित्रता
- स्थायित्व एवं समायोजन का अभाव
- व्यवहार में विभिन्नता
- कामुकता का जागरण
- समस्या बाहुल्य की अवस्था
- स्वतंत्रता एवं विद्रोह की भावना
- कल्पना का बाहुल्य
- बुद्धि का अधिकतम विकास
- आत्म सम्मान की भावना
- परमार्थ की भावना
- नेतृत्व की भावना
- अपराध प्रवृत्ति का विकास
- रूचियों में परिवर्तन एवं स्थिरता
- समूह को महत्व
- वीर पूजा की भावना

- समाज सेवा की भावना
- विरोधी मानसिक दषाएँ
- धार्मिक चेतना
- जीवन दर्षन का निर्माण
- व्यवसाय का चयन

संवेग :

संवेग को अंग्रेजी भाषा में Emotion कहा जाता है। Emotion शब्द सामान्यतः बहुधा प्रयोग किया जाता है तथा यह किषोरावस्था की एक विषेष विषेषता होती है। Emotion शब्द लैटिन भाषा के Emovere शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ उत्तेजना या किसी व्यक्ति की उत्तेजित दषा। वुडवर्थ महोदय ने संवेग को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि, "प्रत्येक संवेग एक अनुभूति होती है, तथा प्रत्येक संवेग उसी समय एक गत्यात्मक तत्परता होता है।" संवेग बालक के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, चारित्रिक, चिन्तन–मनन इत्यादि सभी पक्षों को प्रभावित करते हैं। अर्थात संवेग व्यक्ति के सभी पक्षों को प्रभावित करते हैं।

संवेग के तत्त्व : संवेग में तीन तरह के तत्त्व होते हैं –

1. दैहिक तत्त्व
2. संज्ञानात्मक तत्त्व
3. व्यवहारपरक तत्त्व

संवेग की विषेषताएँ :

- व्यापकता
- तीव्रता
- व्यक्तिक्ता
- सुख–दुःख की भावना
- विचार शक्ति का लोप
- स्थानांतरण
- पराश्रयी स्वरूप
- शारीरिक परिवर्तन

- स्थिरता की प्रवृत्ति
- व्यवहार में परिवर्तन
- क्रिया की प्रवृत्ति
- संवेगात्मक संबंध
- शारीरिक परिवर्तन
- मानसिक परिवर्तन

वुण्ट का विष्वास है कि किसी परिस्थिति में शारीरिक क्रियाओं से उत्पन्न होने वाले विभिन्न संवेदनों और अनेक प्रकार के भावों के संगठन से चेतन अनुभव का एक रूप बनता है, जिसे संवेग कहते हैं। उद्दीपनों के भेद से भावों में भेद उत्पन्न होता है। शारीरिक क्रियाओं के भेद से शारीरिक संवेदनों में भी भेद होता है। भाव और शारीरिक संवेदन के भेद तथा उनके संगठन के भेदों से अनेकानेक प्रकार के संवेग उत्पन्न होते हैं।

संवेग की मूल अवधारणा में भाव की प्रबलता पाई जाती है। अतः भाव को जानना भी अति महत्त्वपूर्ण है। भाव एक अत्यधिक आत्मगत्, अमूर्त एवं चंचल मानसिक प्रक्रिया है, जिससे सुख अथवा दुःख का अनुभव होता है।

भाव किसी अनुभव के संवेदी अन्तर्विषय पर अभिबोध की प्रतिक्रिया की पहचान है।

किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास :

संवेगात्मक विकास से तात्पर्य इस बात से होता है कि बालकों में विभिन्न तरह के संवेगों का विकास कैसे होता है? किन कारकों द्वारा इनका विकास प्रभावित होता है? संवेगात्मक विकास भी विकास की एक अवस्था है, जो विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों की देन होती है। जैसे–जैसे किषोरों के ज्ञान का क्षेत्र बढ़ता है उनमें संवेग उत्पन्न करने वाली परिस्थितियाँ भी बदल जाती हैं। किषोरावस्था में संवेगात्मक विकास विचित्र रूप का होता है। किषोर की संवेगात्मक अभिव्यक्ति में पर्याप्त अंतर आ जाता है, क्योंकि उनका ज्ञान क्षेत्र व्यापक हो जाता है और संवेग उत्पन्न करने वाली परिस्थितियाँ भी बदल जाती हैं। किषोरावस्था में विरोधी मनोदषाएँ दिखाई देती हैं। किसी परिस्थिति विषेष में वह अत्यधिक प्रसन्न तथा दूसरे अवसर पर उसी प्रकार की परिस्थिति में अवसादपूर्ण दिखाई देता है। बी. एन. झा महोदय ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि, "जो परिस्थिति एक अवसर पर उसे उल्लास से भर देती है, वही परिस्थिति

उसे दूसरे अवसर पर छिन्न कर देती है।" इस प्रकार अधिकतर वह संवेगात्मक तनाव की स्थिति में रहता है। संवेगात्मक तनाव का प्रकाषन प्रायः उसकी उदासीनता, निराषा, विद्रोह तथा अपराध प्रवृत्ति में होता है। किषोर न केवल तनाव की अवस्था में रहते हैं बल्कि वे संवेगात्मक उतार–चढ़ाव से भी जूझते हैं। वे कभी बहुत खुष तो कभी बहुत उदास हो जाते हैं। वे कभी–कभी अपने माता–पिता और रिष्तेदारों पर भी भड़क उठते हैं। वे नहीं समझ पाते कि अपनी भावनाओं को कैसे व्यक्त करें और कभी–कभी लोगों को अपनी परेषानियों का लक्ष्य बना डालते हैं। व्यस्कों के लिए यह समझना जरूरी है कि संवेगात्मक उतार–चढ़ाव किषोरावस्था का साधारण पहलू है और कई किषोर इस संवेगात्मक उतार–चढ़ाव से निकल कर दक्ष व्यस्क बनते हैं। आरंभिक किषोरावस्था में भावनात्मक परिवर्तन इस काल के दौरान होने वाले हार्मोन्स के स्त्राव से संबंधित होते हैं। महत्वपूर्ण हार्मोनल बदलाव यौवनारंभ को दर्षाते हैं। यौवनारंभ नकारात्मक संवेगों से जुड़ी हुई अवस्था है। और समय के साथ किषोर बदले हुए हार्मोनल स्तर के साथ अनुकूलित हो जाता है और उसका मन सामान्य रहने लगता है।

विभिन्न शोधकर्ताओं ने यह निष्कर्ष निकाला है कि यद्यपि किषोरावस्था के संवेग हार्मोन्स में परिवर्तन के कारण होते हैं लेकिन वे कई और कारणों जैसे कि तनाव, खाने–पीने का पैटर्न, यौन गतिविधि और सामाजिक संबंध से भी जुड़े होते हैं। हार्मोनल परिवर्तन से भी ज्यादा वातावरणीय अनुभव किषोरों के संवेगों के बदलाव में योगदान देते हैं। अतः निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि हार्मोनल परिवर्तन और वातावरणीय अनुभव दोनों ही किषोरावस्था में तेजी से बदलती मनोदषाओं के लिए जिम्मेदार होते हैं।

विद्यार्थियों के लिए सुझाव :

1. विद्यार्थियों को चाहिए कि वे अपने ताकत (Strength) और कमजोरी (Weekness) को पहचानने का प्रयत्न करें।
2. विद्यार्थियों को यह सुझाव दिया जाता है कि वे अपने षिक्षा को सही दिषा दें।
3. विद्यार्थियों को यह सुझाव दिया जाता है कि वे अपनी पढ़ाई तथा अपने व्यवसाय को अपनी योग्यता तथा क्षमतानुसार चयन करे।

अध्यापक तथा विद्यालय के लिए सुझाव :

1. विद्यार्थियों को सही दिषा देना विद्यालय का काम है तथा बालक की योग्यता तथा क्षमता के अनुसार उसे परामर्ष एवं मार्गदर्षन देते रहना चाहिए।
2. विद्यार्थियों के संवेगों की पहचान कर उसे सही दिषा देना चाहिए।

3. विद्यालय में अलग से परामर्ष केंद्र की व्यवस्था करनी चाहिए तथा अनुभवी षिक्षक को नियुक्त करना चाहिए।

अभिभावकों के लिए सुझाव :

1. विद्यार्थी माता–पिता की सोच के अनुरूप होते हैं। अतः माता–पिता को चाहिए कि वे अपने संवेगों को सही दिषा में अभिव्यक्त करें।
2. विद्यार्थी को माता–पिता से ज्यादा कोई नहीं जानता। अतः माता–पिता को चाहिए कि वे अपने बालकों के संवेगों को सही दिषा देने का प्रयास करें।
3. माता–पिता को चाहिए कि वे अपने बालकों को निराषा के क्षणों में मानसिक संबल दें ताकि विद्यार्थी को उन क्षणों से उबरने में सहायता मिल सके।

बालकों के विकास में माता–पिता, षिक्षक तथा पूरे समाज की स्वाभाविक रूचि होती है क्योंकि वे ही राष्ट्र के भावी नागरिक होते हैं और भविष्य में देष का भार उन्हीं को संभालना होता है। अतः बच्चों के चतुर्दिक विकास पर ही राष्ट्र का भावी विकास निर्भर करता है।

निष्कर्ष :

किषोरावस्था जीवन निर्माण की अवस्था है। यह वही अवस्था है जहाँ से किषोर वयस्क होता है तथा समाज के लिए एक जिम्मेदार नागरिक बनता है। जीवन संघर्ष की यात्रा है, जहाँ सुख–दुःख तथा उतार–चढ़ाव आते रहते हैं। व्यक्ति के धैर्य की परीक्षा का यही समय तथा अवस्था है, जहाँ वह अपने संवेगों पर नियंत्रण रखते हुए तथा संवेगों को परिस्थितिनुकूल व्यवहार की कला में प्रवीण होने का प्रयास करता है। बालक के चरित्र एवं व्यक्तित्व निर्माण में संवेगों का बहुत महत्त्व है। अतः संवेगों को सकारात्मक दिषा में ही व्यवहार करना चाहिए। किषोरों का मनोवैज्ञानिक विकास शुन्य में नहीं होता है, बल्कि उसके सामाजिक संदर्भ का उसके विकास पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव होता है इसलिए सभी को यह प्रयास करना चाहिए कि घर, परिवार, विद्यालय तथा समाज का वातावरण ऐसे निर्मित किया जाए कि बालकों को सही तथा सकारात्मक दिषा मिल सके, जिससे उसके अंदर सकारात्मक संवेग ही उत्पन्न हो। साथ ही बालकों के भी विचारों को सम्मान देना चाहिए तथा उसके गलत व्यवहार पर बड़े प्यार से तथा सकारात्मक ढंग से उसे समझाना चाहिए। स्वार्थ रहित व्यवहार के साथ उसकी परवरिष करना चाहिए।

संदर्भ :

1. राजपूत जगमोहन सिंह, 2024, शैक्षिक परिवर्तन का यथार्थ, विद्या विहार, नई दिल्ली

2. सिंह अरूण कुमार, 2016, षिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन, पटना
3. पचौरी डॉ. गिरिष, 2016, बाल्यावस्था एवं विकास, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ. 51
4. सिंह अरूण कुमार, 2015, उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास, पटना
5. सुलेमान मुहम्मद, 2014, उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास, पटना
6. सारस्वत मालती, 2012, षिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, आलोक प्रकाषन, लखनऊ
7. पाठक पी. डी., 2012, षिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेषन, आगरा
8. चौबे एस. पी., 2005, बाल विकास मनोविज्ञान के मूल तत्त्व, कांसेप्ट पब्लिषिंग कंपनी, नई दिल्ली

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed /Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-3, Issue-3, October-2024
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number Oct.-2024/15
Impact Factor (RPRI-4.73)
https://doi-ds.org/doilink/01.2023-11922556

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ.हरीश कुमार पाण्डेय

for publication of research paper title

अध्यापकों में किशोरावस्था की संवेगात्मक विकास की समझ का समीक्षात्मक अध्ययन

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-03, Issue-03, Month October, Year-2024.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY